Rise of Hitler and Nazism (Part-1)

- FOR P.G. SEM-2,CC-6,UNIT-2

Adolf Hitler

(Photo Source-Wikipedia)

जर्मनी में नाजीवाद का उदय दो विश्व युद्धों के बीच के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है जिसने इस अवधि में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित किये। एक कार्यक्रम, सिद्धांत एवं दर्शन के रूप में नाजीवाद को अंतिम रूप में हिटलर ने प्रदान किया। इस नई आक्रामक विचारधारा ने समस्त यूरोपीय समाज में तहलका मचा दिया। अपने समकालीन फासीवादी सिद्धांतों से कई बिंदुओं में समानता रखने के बाद भी नाजीवाद में असमानता के कई बिंदु भी विधमान थे।

एडोल्फ हिटलर का जन्म 20 अप्रैल 1889 ई. को **ऑस्ट्रिया** के एक छोटे से गांव **बौनो** में हुआ था। उसके पिता चुंगी विभाग में एक साधारण नौकर थे। निर्धनता के कारण व उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका। उसने कुछ समय चित्रकार के रूप में कार्य किया, मजदूरी की। प्रथम विश्वयुद्ध में वह जर्मन फौज में एक सिपाही के रूप में भर्ती हुआ और निष्ठा पूर्वक युद्ध किया। बहादुरी के लिए उसे आयरन क्रॉस भी मिला ।अन्य अनेक जर्मन सिपाहियों की तरह वह भी प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की हार को स्वीकार नहीं कर पाया और वर्साय की संधि को जर्मनी के प्रति बेहद अपमानजनक और अन्यायपूर्ण समझने लगा। अस्पताल में घायल पड़े हिटलर ने वहीं से घोषणा की कि जर्मनी की पराजय के कारण उसके नेताओं की बुजदिली और वाइमर गणतंत्र है। अतः उसने राजनीति में प्रवेश कर जर्मनी का उद्धार करने का दृढ़ संकल्प लिया ।1919 में हिटलर ने सूचना प्रसारण मंत्रालय में छोटे कर्मचारी के रूप में कार्य करना शुरू किया जिसका मुख्य कार्य विभिन्न राजनीतिक दलों की गतिविधियों की सूचना उच्चाधिकारियों को देना तथा साम्यवादी विचारों के प्रसार को रोकना था । इसी सिलसिले में वह एंटन ड्रैक्सलर द्वारा स्थापित जर्मन वर्कर्स पार्टी के संपर्क में आया और उसका सदस्य बना। 1920 में इस दल को अपने कब्जे में लेकर इसका नाम '**राष्ट्रीय समाजवादी जर्मन श्रम दल**' या '**नात्सी पार्टी**' रख दिया। इस पार्टी के 25 सिद्धांतों की घोषणा की।

8 नवंबर 1923 ई. को जर्मनी की सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से हिटलर ने ल्युडेनडार्फ के साथ मिलकर विद्रोह कर दिया ।इस विद्रोह का दमन कर दिया गया और हिटलर को 5 वर्ष के लिए कारावास का दंड दिया गया। जेल में ही उसने '**मेरा संघर्ष**' (Mein Kampf) नाम से अपनी आत्मकथा लिखी। नात्सी दल के लोगों के लिए 'मेरा संघर्ष' बाइबिल या गीता के समान महत्वपूर्ण ग्रंथ बन गई।

हिटलर ने अपने उद्देश्यों को तीन शब्दों में व्यक्त किया

(1) यहूदियों का विरोध
(2) बोल्शेविजम का विरोध
(3) पूंजीवाद का विरोध

1924 ईस्वी में जेल से रिहा होने के पश्चात उसने अपने दल को पुनर्गठित करने का

प्रयास किया। जर्मनी के इतिहास में यह काल शांति का काल था। इस समय उसके संबंध विदेशों से अच्छे थे। उसको विदेशों से पर्याप्त मात्रा में ऋण मिल रहा था। इससे उसकी उन्नति सफलतापूर्वक हो गई थी ।1929 में आर्थिक संकट उत्पन्न होने पर हिटलर को अपनी शक्ति बढ़ाने का सुंदर अवसर मिला ।1932 ई.तक इस दल के सदस्यों की संख्या 70 लाख तक पहुंच गई। नव युवकों को अपना समर्थक बनाने के लिए उसने **हिटलर नवयुवक समाज**(Hitler Youth Society) की स्थापना की। हिटलर ने अपनी पार्टी के संगठन के लिए दो प्रकार के दलों का निर्माण किया-

1. Sturm Ahteilungen(S.A.)- इस दल के सदस्य **भूरे रंग** की कमीज पहनते थे यह लोग नात्सी पार्टी की सभाओं की रक्षा करते थे तथा अन्य पार्टियों की सभाओं को शक्ति के बल पर भंग करने का प्रयास करते थे।
2. Schuiz Stufflen-(S.S.)- इस दल के सदस्य **काले रंग** का कमीज पहनते थे ।इनका कार्य नात्सी नेताओं की रक्षा करना था।

हिटलर की इन कार्यों से उसका दल बहुत संगठित हो गया था ।देश के समस्त भागों में उसकी पार्टी की शाखाएं फैल गई थी। 1928 ,1930 के चुनाव में नाजी पार्टी को सीमित सफलता मिली 1932 के चुनाव में अन्य दलों के मुकाबले उसे सर्वाधिक स्थान प्राप्त हुए थे। अतः राष्ट्रपति हिण्डेनबर्ग ने हिटलर को चांसलर पद के लिए आमंत्रित किया। जनवरी 1933 में हिटलर ने चांसलर पर स्वीकार कर लिया और नेशनलिस्ट दल के साथ मिलकर एक संयुक्त मंत्रिमंडल का निर्माण किया।

लोकसभा में अपना साधारण बहुमत प्राप्त कर हिटलर ने **तृतीय जर्मन साम्राज्य** (Third Reich)की स्थापना घोषणा की। हिटलर का शक्ति में आना वाइमर गणराज्य के लिए विनाश का कारण बना ।उसने गणतंत्र के झंडे के स्थान पर प्राचीन झंडे को स्वास्तिक चिन्ह से युक्त कर जर्मनी का राष्ट्र ध्वज घोषित किया ।उसने 23 मार्च 1933 को लोकसभा की समस्त शक्तियां 4 वर्ष के लिए मांग ली। इसके बाद लोकसभा का अनिश्चित काल के लिए भी विघटन कर दिया गया। हिटलर ने 29 जून 1933 को हिण्डनबर्ग को कैबिनेट से पृथक कर दिया ।उसको अपनी नेशनलिस्ट पार्टी को भंग करने का आदेश दिया गया ।जुलाई 1933 में कैथोलिक, सेनेट्रस्ट पार्टी तथा पीपुल्स पार्टी आदि का दमन किया गया तथा यह घोषणा की गई कि देश में नात्सी पार्टी ही एक राजनीतिक दल है ।2 अगस्त 1934 को राष्ट्रपति हिण्डनबर्ग की मृत्यु के पश्चात राष्ट्रपति तथा चांसलर के पद को एक जगह मिला दिया गया तथा इसे जनमत संग्रह द्वारा अनुमोदन करा दिया गया ।अब हिटलर जर्मनी का चांसलर तथा राष्ट्रपति दोनों ही बन गया।वह जर्मनी का नया भाग्य विधाता बन गया। एक नेता, एक दल ,एक राज्य, नाजी सर्व सत्ता का आदर्श बना।

हिटलर एंव नाजीवाद के उदय के कारण:-

1. **वर्साय की कठोर एवं अपमानजनक संधि**- प्रथम विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्र ने पराजित जर्मनी को वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने को विवश किया। संधि के द्वारा जर्मनी के बहुत सारे प्रदेशों को छीन लिया गया तथा उसका निशस्त्रीकरण कर दिया गया। फलतः जर्मन जनता अपने को अपमानित महसूस कर रही थी और ऐसे नेता की खोज में थी जो देश की इस अपमान को धोकर राष्ट्रीय गौरव को की पुनः स्थापना करें ।हिटलर और नाजी दल ने जनता की इस मनोविज्ञान का लाभ उठाकर सत्ता प्राप्त की।

हार्डी तथा **लिप्सन** आदि विद्वानों का कहना है कि यदि हिटलर के उदय का कारण वर्साय की संधि है तो उसका उत्कर्ष इस संधि के तीन- चार वर्ष पश्चात होना चाहिए था जबकि जर्मनी का अपमान अपने पराकाष्ठा पर था परंतु हिटलर का उदय वर्साय संधि के 14 वर्ष पश्चात हुआ। उस समय तक वर्साय संधि की बहुत सी कठोर शर्तो में परिवर्तन हो गया था। लोकार्नो संधि के बाद 1925 में वह राष्ट्र संघ का सदस्य बन गया। विदेशी सेनाओं ने जर्मन क्षेत्रों को खाली कर दिया था एवं डावस योजना ,लोजान सम्मेलन के द्वारा क्षतिपूर्ति की राशि कम की जा चुकी थी।

यह बात ठीक है कि वर्साय की संधि के तत्काल बाद हिटलर को सत्ता प्राप्ति नहीं हुई किंतु यह भी सत्य है कि वर्साय की संधि में निहित कठोरता का बार-बार उल्लेख कर उसने जनता के मनोविज्ञान से लाभ उठाया और इस माध्यम से जनता में नाजी दल को स्वीकृति दिला कर सत्ता प्राप्त की। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वर्साय की संधि हिटलर के उत्कर्ष का चाहे एक मात्र कारण भले ही ना हो किंतु उसके उदय के सहायक कारकों में से एक जरूर है।

2. **आर्थिक संकट-** नात्सी पार्टी तथा हिटलर के उत्कर्ष का सबसे महत्वपूर्ण कारण जर्मनी का आर्थिक संकट है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी को क्षतिपूर्ति के रूप में भारी राशि देने को कहा गया। मुआवजा चुकाने के लिए अमेरिका ने उसे कर्ज भी दिया अतः वह कर्ज के बोझ से भी दबा था। उसका निर्यात व्यापार भी ठप सा हो गया था। 1929 -30 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने जर्मनी की कमर तोड़ दी । जर्मनी का प्रत्येक वर्ग आर्थिक संकट का शिकार हो गया । बेरोजगारों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई, जनता की क्रय शक्ति कम हो गयी जिससे गणतंत्र के प्रति आम आदमी का मोहभंग हो गया। वे किसी करिश्माई नेता की बेचैनी से प्रतीक्षा करने लगे। ऐसे में हिटलर ने बेकारी दूर करने, औपनिवेशिक विस्तार करने ,जनता की क्रय शक्ति बढ़ाने का आश्वासन दिया। इस तरीके से आर्थिक संकट दूर करने का आश्वासन देकर सभी वर्गों का समर्थन हासिल किया ।**गेथार्न हार्डी** के अनुसार हिटलर की सफलता का प्रधान कारण वर्साय का अपमान नहीं वरन हिटलर में व्याप्त नेतृत्व का गुण तथा आर्थिक संकट की सहवर्ती निराशा थी।

3.**साम्यवाद का उदय-** हिटलर के उदय का एक प्रमुख कारण साम्यवाद का बढ़ता हुआ

भय था। रूस की बोल्शेविक क्रांति की सफलता से उत्साहित होकर साम्यवादियों ने विश्व भर में साम्यवादी सरकार गठित करने की बात की। हिटलर ने जर्मनी पर रूस के प्रभाव का भय दिखलाकर जर्मन जनता को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया। इस समय जर्मनी में साम्यवादी का जोर पकड़ रहा था ।1930 के निर्वाचन में साम्य वादियों को लोकसभा में 77 स्थान मिले थे। 1932 के निर्वाचन में उनको 89 स्थान मिले। इसका लाभ उठाकर नात्सियों ने जर्मनी को साम्यवाद का भय दिखाना प्रारंभ किया। उन्होंने प्रचार किया कि-'यदि साम्यवादियों ने नात्सी पार्टी को पराजित कर दिया तो जर्मनी में करोड़ों साम्यवादी दिखाई देने लगेंगे।' इससे वहां के उद्योगपति एवं पूंजीपति घबरा गए उन्होंने हिटलर को हर तरह से समर्थन देने का फैसला किया। इस धन से हिटलर एंव नाजी पार्टी का तीव्र गति से विकास हुआ।

To be continued

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OFHISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

Last modified: 12:01